खोज थके सब खेल

खोज थके सब खेल खसमरी।
मन ही में मन उरझाना, होत न काहू गमरी।। टेक।।

मन ही बांधे मन ही खोले, मन तम मन उजास।
ए खेल सकल है मन का, मन नेहेचल मन ही को नास।।

मन उपजावे मन ही पाले, मन को मन ही करे संघार।
पांच तत्व इंद्री गुन तीनों, मन निरगुन निराकार।।

मन ही नीला मन ही पीला, स्याम सेत सब मन।
छोटा बड़ा मन भारी हलका, मन ही जड़ मन ही चेतन।।

मन ही मैला मन ही निरमल, मन खारा तीखा मन मीठा।
एही मन सबन को देखे, मन को किनहूं न दीठा।।

सब मन में ना कछू मन में खाली मन मनही में ब्रह्म।
महामत मन को सोई देखे, जिन दृष्टे खुद खसम।।